Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महाराजा बलवंत सिंह और बनारस में उनका योगदान

चंद्रकेश पटेल* प्रो.ज्योति साह**

*** शोध छात्र, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.) भारत**
**** शोध निर्देशिका, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, डॉ. अम्बेडकर राजकीय पी.जी. कॉलेज, ऊंचाहार, रायबरेली (उ.प्र.) भारत**

शोध सारांश – भारतीय इतिहास में अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुती दी है। लेकिन इतिहास में कुछ वीरों का योगदान अद्धितीय रहा हैं।उन्हीं में से एक थे–महाराजा बलवन्त सिंह। ये 1740 से 1770 ईस्वी तक अवध के अधीन बनारस के जमींदार थे। बनारस में इनका योगदान भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इन्होंने 18वीं शताब्दी में बनारस राज्य को मजबूत और स्वतंत्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने साहस और बलिदान से बनारस राज्य के विस्तार में अपना योगदान दिया। और बनारस में अपना एक विस्तृत राज्य स्थापित किया।इसके अलावा उनके राज्य में विद्धानों का आदर,सत्कार एवं सूफी सन्तों का सम्मान होता था। इस लेख के माध्यम से महाराजा बलवन्त सिंह और बनारस में उनका क्या योगदान रहा,का विस्तृत एवं तार्किक अध्ययन किया जायेगा।यह लेख मुख्यत: द्धितीयक स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित हैं। इसमें विश्लेषणात्मक,गुणात्मक एवं संरचनात्मक खोज पद्धति का प्रयोग किया गया है।

शब्द कुंजी – नवाब, अवध, अंग्रेज, जमींदार।

प्रस्तावना – 18वीं शताब्दी का उत्तर भारत राजनीतिक अस्थिरता और परिवर्तन का काल था। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ-साथ क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर रही थीं। मुगल सत्ता के कमजोर होने पर अनेक जमींदारों और छोटे राजाओं ने अपनी-अपनी स्वायत्ता सत्ता स्थापित कर ली थी। इसी परिवेश में राजा बलवन्त सिंह ने बनारस में एक सशक्त राज्य की स्थापना की थी।

बलवंत सिंह का जीवन परिचय– इनका जन्म बनारस शहर से 9 मील पश्चिम में थुथुरिया ग्राम में गौतम वंश/कुल के भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मनसाराम था। बलवंत सिंह की जन्मतिथि का ठीक-ठीक पता नहीं है,किन्तु इनका जन्म स्थान थुथुरिया गांव ही था। बचपन से ही वे काफी बुद्धि-कुशल थे।घर पर ही उन्होंने गुरु से संस्कृत,फारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।वे एक कुशल निशाने बाज भी थे।[1] बलवन्त सिंह की दो रानियाँ/पत्नियां थीं।पहली रानी गुलाब कुँवर पिंडरा के बाबू बरियार सिंह की कन्या एवं दूसरी रानी पन्ना कुँवर, डोभी के रघुवंशी क्षत्रिय राजा भीम सिंह की पुत्री थीं।[2] बलवंत सिंह का कोई वैध पुत्र नहीं था। इनकी विवाहिता रानी गुलाब कुँवर से सिर्फ एक पुत्री थी।बलवन्त सिंह की रखेलिन पत्नी पन्ना कुंवर से दो पुत्र थे- चौतसिंह और सुजान सिंह।[3]

बलवंत सिंह को बनारस की जमींदारी/राजगद्दी मिलना – 1730 ई0 में अवध के नवाब सआदत खाँ ने बनारस का समस्त अधिकार मुर्तजा खाँ को सौंप दिया था। बाद में किन्हीं कारणों से नवाब सआदत खां ने अपने जिगरी दोस्त मीर रुस्तम अली को आठ लाख रुपए के बंदोबस्त पर बनारस का अधिकारी नियुक्त किया,जिसे बनारस तहसील के बन्दोबस्त का अधिकार प्राप्त हुआ, इसमें माल, दीवानी, फौजदारी आदि सभी अधिकार सम्मिलित थे।[4] आधुनिक बनारस के संस्थापक मनसाराम इन्हीं रुस्तम अली के यहां नौकरी करते थे। मनसाराम कसवार परगने के थुथुरिया गाँव (आधुनिक गंगापुर) के रहने वाले थे। आरम्भ में ये कसवार के राजा बैरीसाल की नौकरी में थे। एक बार उनके इस मालिक ने किसी काम से उन्हें रुस्तम अली के पास भेजा और उसके बाद भी ये बार-बार जमींदारी के काम से रुस्तम अली के पास जाते रहे। अन्ततः वे रुस्तम अली के प्रियपात्र हो गये। इसका लाभ उठाते हुए उन्होंने रुस्तम अली व बैरीसाल में दुश्मनी करा दी। बाद में वे रुस्तम अली की तरफ से बैरीसाल से लड़े और रुस्तम अली के दरबार में अपनी जगह बना ली।सन् 1734 ई. में अवध के नवाब ने रुस्तम अली की अव्यवस्था एवं समय पर ठीक से कर न भेजने पर रुष्ट होकर उसे बनारस से हटाने के लिए अपने नायब सफदरजंग को बनारस भेजा।रुस्तम अली ने अपनी ओर से नवाब को शांत करने के लिए मनसाराम को भेजा। मनसाराम ने रुस्तम अली के विरुद्ध ही सफदरजंग के पास पत्र लिखा।अवध का नवाब क्रुद्ध होकर मनसाराम को रुस्तम अली का समस्त अधिकार लिखने के लिए तैयार हो गया। पर मनसाराम ने अवसर पाकर एवं चार लाख अधिक मालगुजारी का लालच देकर बनारस, जौनपुर व चुनार परगना की जमींदारी की सनदध्बंदोबस्त अपने पुत्र बलवन्त सिंह के नाम करा लिया। मनसाराम ने धीरे-धीरे अपनी कुशल कूटनीति से रुस्तम अली के सभी अधिकार हस्तगत कर लिये।[5] 1738 ई. में मनसाराम ने दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मदशाह से मिलकर तथा दो लाख सत्रह हजार सात सौ पचहत्तर रुपये मुहम्मदशाह को नजराना भेजकर, उनसे राजा का खिताब और कसवार समेत तीन और मौजों की जमींदारी अपने पुत्र बलवन्त सिंह के नाम लिखवा लीं।वहां के कुछ ठाकुर उनके मार्ग में बाधा थे,जल्दी ही सभी विद्रोही ठाकुरों को परास्त कर इन तीनों मौजों पर बलवन्त सिंह ने अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया।किन्तु बलवन्त सिंह को अपने नाम का सिक्का चलाने का अधिकार नहीं मिल सका था। बाद में उन्होंने अपने पिता के पुराने शत्रु जसवन्त सिंह को पराजित करके मड़ियाहूँ व भदोही के परगनों पर भी अपना अधिकार कर लिया।[6] सन् 1740 ई. में मनसाराम की मृत्यु के बाद उनके बेटे बलवन्त

सिंह बनारस की गद्दी पर बैठे।[7]

बनारस में बलवंत सिंह का योगदान

गंगापुर दुर्ग का निर्माण– 1741 ईस्वी में उन्होंने अपनी पितृभूमि थुथुरिया गाँव का नाम बदलकर गंगापुर कर दिया एवं अपने पुराने मकान को तुड़वाकर उस स्थान पर एक पक्के दुर्ग का भी निर्माण करवाया।[8]

बलवन्त सिंह का राज्य विस्तार – विजयगढ़ व अगोरी दुर्ग पर आक्रमण एवं उन पर अधिकार करना –सन् 1747 ई0 में महाराजा बलवन्त सिंह ने इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद खाँ को पराजित करने के बाद 1748–49 ई. में मिर्जापुर के अन्तर्गत कैमूर की पहाड़ी पर गहड़वाल राजा विजयचंद्र द्वारा निर्मित विजयगढ़ का किला चन्देल राजपूतों से छीन लिया और विजयगढ़(विजयगढ़ राज्य के संस्थापक गहड़वाल वंशीय राजा विजयचन्द्र थे)पर कब्जा कर पास के सभी मौजे हनुमना, हरदी,धनरौल, कुसुमा, रघुनाथपुर आदि चन्देलों के बड़हर–राज्य के अनेक मौजे हस्तगत कर लिये। इसके अलावा बलवंत सिंह ने विजयगढ़ से दक्षिण सोन नदी के तट पर चोपन से दस मील आगे अगोरी के चन्देल वंशीय राजपूत शासकों को पराजित कर अगोरी दुर्ग(अगोरी के चंदेल वंशीय राजा कुन्डेश्वर सिंह द्वारा निर्मित किला) पर भी अधिकार कर लिया। इसके साथ ही दुद्धी एवं चोपन के पहाड़ी इलाको पर भी इनका अधिकार हो गया।[9]

भदोही पर अधिकार – अपनी अमलदारी के प्रारम्भिक दस वर्षों अर्थात् 1748 ई. तक बलवन्त सिंह अपनी मालगुजारी अवध के नवाब को भेजते रहे, किन्तु,1748 ई. में नवाब सफदर जंग दिल्ली के मुगल बादशाह अहमद शाह को रुहेला सरदार अहमद खां बंगश के विरुद्ध मदद के लिए अपनी फौज के साथ दिल्ली गये, उस समय बलवन्त सिह को मौका मिला और नवाब की अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुए एवं नवाब को उस समय अहमद बंगश के विरुद्ध फंसा देखकर उनके अधिकारियों को जो उस समय लगान लेने आये थे,प्रतापगढ़ के सोमवंशी राजा पृथ्वीपति के साथ मिलकर बाहर निकाल दिया तथा राजपूतों की जमींदारी भदोही को लूटकर उसके जमींदार जसवन्त सिंह को मार डाला और भदोही पर अधिकार कर लिया। यह किला उस समय अली कुली खाँ के अधीन इलाहाबाद सूबे के अंतर्गत था।[10] 1750 ईस्वी में अहमद खां बंगश ने इलाहाबाद पर अपना घेरा डाल दिया था।यहीं से वह बनारस पर आक्रमण कर उसे लूटना चाहता था। बालकृष्ण दीक्षित के 7–5–1751 के एक पत्र से पता चलता है कि अहमद खां बंगश को महाजनों से सात लाख रुपए दिलवा कर बलवन्त सिंह ने बनारस की लूट रुकवायी थी।[11]

रामनगर दुर्ग का निर्माण– 1750 ई. में बलवन्त सिंह ने रुस्तम अली के द्वारा निर्मित छोटे से दुर्ग को तोड़ कर गंगा के उस पार व्यास काशी में रामनगर दुर्ग का निर्माण कराया।[12]

नवाब दायम खाँ से युद्ध(1751 ईस्वी)– बिहार के शाहाबाद परगना के केरामंगरौर का क्षेत्र दायम खां के अधिकार में था,जिसके पूर्वज शेरशाह सूरी के काल में गहड़वाल हिन्दू से मुसलमान हो गये थे। दायम खां उन्हीं का एक वंशज था। बलवंत सिंह इसके इलाके को जीतना चाहते थे। अत: उन्होंने बड़ी कूटनीति से अपने चाचा दशाराम को दायम खां के पास भेज दिया। इनके चाचा ने दायम खां के किले का सारा भेद बलवंत सिंह को बता दिया। तब बलवंत सिंह ने 1751 ईस्वी में दायम खां के राज्य पर आक्रमण कर दिया। दायम खां ने इनके चाचा दशाराम को भेदिया समझ कर कारागार में डाल दिया। जब बलवंत सिंह को इसकी सूचना मिली,तो उन्होंने महाराष्ट्रीयन सेना के साथ दुबारा दायम खां के राज्य पर आक्रमण कर दिया। दोनों सेनाओं में पुन: युद्ध हुआ। इस बार बलवंत सिंह जीत गये। उन्होंने अपने चाचा को कारागार से मुक्त कराया तथा बिहार के सूबेदार से मिलकर केरामंगरौर के सभी मौजे अपने नाम करा लिये। इस क्षेत्र का नाम उन्होंने चकिया रखा। यहां तीन पहाड़ी दुर्ग केरामंगरौर, राजदरी दुर्ग,नौगढ़ थे। इस विजय के बाद बलवन्त सिंह ने यहाँ एक ध्वज स्तम्भ भी बनवाया था।[13]

बनारस राज्य की जमती हुई नींव अवध के नवाब के लिए सिर–दर्द बन गयी थी। नवाब ने बलवन्त सिंह की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए अलीकुली खाँ के नेतृत्व में एक सेना बनारस भेजी,किन्तु बलवन्त सिंह की कूटनीति के आगे वह असफल रही। 1751–52 ई. के बीच नवाब ने जौनपुर के जुम्मन खाँ को बलवन्त सिंह के विरुद्ध भेजा। किन्तु इस बार भी सफलता नहीं मिली। अन्त में मौका पाते ही नवाब ने गंगापुर किले पर आक्रमण कर दिया।जब युद्ध के द्वारा किले पर नवाब का अधिकार नहीं हो सका,तो उसने तोप के गोलों से किले को उड़ा देने का आदेश दिया।इस प्रकार तोप के गोलों से किला उड़ा दिया गया और गंगापुर में नवाबी सेना का प्रवेश हो गया।इसके बाद नवाब की सेना ने गंगापुर किले को मनमाने ढंग से खूब लूटा। इस युद्ध में गंगापुर की अत्यधिक क्षति हुई।[14] राजा बलवन्त सिंह प्रतापगढ़ के राजा पृथ्वीपति की मौत (जिसे नवाब सफदर जंग ने हाल ही में बलवंत सिंह की सहायता करने के कारण मार दिया था) का हाल सुनकर अपने परिवार के साथ गंगा के दक्षिण के तरफ पहाड़ों में भाग गए।अन्तत: अवध का नवाब बलवंत सिंह के द्वारा माफी मांगने पर उनकी मालगुजारी में दो लाख रुपया और देने का इजाफा करके वह अवध चला गया।फिर बलवंत सिंह बनारस वापस आ गए।[15]

अहरौरा क्षेत्र पर अधिकार– मुगल काल के अंतिम समय में अहरौरा पर लतीफशाह ने अपना राज्य स्थापित कर लिया था।1753 ई. में बलवन्त सिंह ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया। लतीफ शाह ने बलवंत सिंह सन्धि कर ली। किन्तु जब 1754 ई. में लतीफ शाह बीमार पड़ा।तब बलवन्त सिंह ने इसके द्वारा संधि के विरुद्ध कार्य करने के आरोप पर उसके किले को चारों ओर से घेर लिया।लतीफ शाह चकिया के जंगलों में भाग गया। अंतत: अहरौरा पर बलवंत सिंह का अधिकार हो गया।[16]

पतीता की विजय(1754 ईस्वी) –अहरौरा को जीतने के दौरान ही बलवन्त सिंह ने अपनी सेना के साथ चुनार और अहरौरा के मध्य का इलाके भागवतपुर के पतीता के किले को घेर लिया। यह किला भागवत परगने के मुसलमान जमींदार का था।अंतत: इस किले पर भी बलवन्त सिंह का अधिकार हो गया।[17]

1755 ई. में बलवन्त सिंह ने जौनपुर की अन्य कई छोटी–छोटी जमींदारियां अपनी कूटनीति से जीत कर अपने अधीन कर लीं थीं। इस बीच जब 1754 ईस्वी में अवध के नवाब सफदरजंग की मृत्यु हो गयी और नया नवाब शुजाउद्दौल्ला बना तो बलवन्त सिंह ने चुनार का किला लेने के लिए चाल चली। और दिल्ली के दरबारी कामदार खां को घूस देकर मिला लिया। नये नवाब शुजाउद्दौल्ला को उस चाल का पता चल गया और वह बलवन्त सिंह को दण्डित करने चल दिया, पर बलवंत सिंह को नवाब के आगमन की सूचना मिली, तो वे चकिया के जंगलों की ओर चले गये और नवाब उन्हें नहीं पा सका। नवाब ने बलवन्त सिंह को जान से मारने का षड्यन्त्र रचा, किन्तु बलवन्त सिंह को जब इस षड्यन्त्र का पता चला, तब उन्होंने नवाब के प्रमुख दरबारियों को मिलाकर नवाब के क्रोध को शांत कर इस षड्यंत्र को

असफल कर दिया।[18] 1761 ई. में अवध के नवाब ने गाजीपुर के माल-गुजार फजल अली के राज्य की अव्यवस्थाओं- जैसे समय से मालगुजारी न देना,उसके राज्य में शिथिलता का होना, से तंग आकर उसके विरुद्ध अपने नायब बेनी बहादुर तथा इनकी सहायता के लिए बलवन्त सिंह को भी सेना सहित भेजा। बलवन्त सिंह की सेना ने फजल अली की सेना को पराजित कर दिया। फजल अली पटना की ओर भाग गया। बेनी बहादुर बलवन्त सिंह की वीरता से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने आठ लाख रुपये बतौर नजराना तथा गाजीपुर के 22 परगने की जमींदारी अवध के नवाब से कहकर बलवंत सिंह को दिलवा दी। इसके बाद बलवंत सिंह ने बलिया के राजा भोजदेव के इलाकों को भी जीतकर अपने अधिकार में कर लिया।इसके अलावा सिरिंगा के सामन्त दुर्गविजय सिंह को हराकर उसके दुर्ग को भी जीत लिया।इसी प्रकार मिर्जापुर के कन्तित राज्य की भूमि पर बलवन्त सिंह ने अपना अधिकार कर लिया।आगे बढ़कर वे लक्ष्मणेश्वर परगने के युद्ध में भी विजयी हुए। इस प्रकार अपनी वीरता व चातुर्य के बल पर उन्होंने काफी बड़े क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।[19]

बक्सर के युद्ध(1764 ईस्वी) में इनकी भूमिका –बक्सर की लड़ाई में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध दिल्ली के मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय तथा बंगाल के अपदस्थ नवाब मीरकासिम की सहायतार्थ बक्सर जाते समय, जब अवध का नवाब शुजाउद्दौला बनारस में रुका,तो उसने बलवन्त सिंह से धन तथा सेना की सहायता मांगी। बलवन्त सिंह प्रत्यक्ष रूप से न तो अंग्रेजों से विरोध मोल लेना चाहते थे न ही नवाब से।अत: उन्होंने बड़ी चालाकी से नवाब की मांग के अनुसार दो हजार घुड़सवार और पाँच हजार पैदल सिपाहियों को लेकर युद्ध में आने का वचन देकर उसे(नवाब को) बनारस से विदा किया।[20] जब बक्सर में युद्ध शुरू हो गया तो बलवंत सिंह अपने दिये हुए वचन के अनुसार सेना सहित वहाँ उपस्थित हो गये, किन्तु नवाब को उन पर पूर्ण विश्वास न था। अत: उसने उन्हें अपनी सेना सहित गाजीपुर के मुहम्मदाबाद परगने में ही रहने का आदेश दिया। उसका ऐसा करने का यह कारण था कि यदि वे मेरी सहायता नहीं करते,तो अंग्रेजी कम्पनी की भी सहायता न कर सकें। बलवंत सिंह भी यही चाहते थे कि मैं युद्ध से किसी प्रकार बचा रहूँ। अंग्रेज व नवाब दोनों मुझपर अप्रसन्न न हों और मुझे किसी प्रकार की हानि न हो। हुआ भी ऐसा ही बलवंत सिंह अपनी सेना सहित युद्ध के बाहर ही बाहर चक्कर काटते रहे। जब बक्सर के युद्ध में शाह आलम की संयुक्त सेना पराजित होकर भाग खड़ी हुई।उसके बाद अंग्रेजों की इच्छानुसार बिहार के कई जिलों के साथ गाजीपुर के अनेक परगने, जिन्हें बलवंत सिंह ने पहले ही अपने अधिकार में कर लिया था,शाह आलम के हाथ से अब कम्पनी के अधिकार में आ गये थे। बलवंत सिंह ने कम्पनी को अपने पक्ष में करके एवं उन्हें आठ लाख रुपये देकर उन परगनों को अपने कब्जे में कर लिया और इसके अलावा बलवंत सिंह ने अनेकों सुविधाओं के साथ-साथ 1765 ई. में क्लाइव द्वारा एक ऐसा शर्तनामा भी प्राप्त कर लिया, जिससे फिर कभी अवध का नवाब उनपर किसी प्रकार का जुल्म न कर सके।[21] 1767 ई. में क्लाइव के इंग्लैंड वापस चले जाने के बाद बंगाल में कार्टियर नया गवर्नर बनकर आया। तब अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने बलवंत सिंह से बदला लेने के लिए तथा उनका बनारस पर से अधिकार समाप्त करने के लिए गवर्नर के प्रधान सेनापति सर हेनरी मुनरो को अपनी तरफ मिलाकर तथा उसे धन का लालच देकर उसके साथ बनारस आया। उधर कार्टियर भी अपने तोपखाने और सैनिकों के साथ नवाब की सहायता के लिए तैयार था।तब बलवंत सिंह ने कूटनीति से काम लिया। वे नवाब से मिलने का बहाना लेकर तथा नवाब के सैनिकों को चकमा देकर सीधे गवर्नर कार्टियर के डेरे पर जा पहुँचे और उन्होंने गवर्नर से निवेदन करते हुए उसे समझाया कि नवाब से मेरे विरोध का कारण कम्पनी को सहायता देना था, इसलिए कंपनी सरकार का कर्तव्य है कि वह मेरी सहायता व रक्षा करे, जैसा कि आपके पूर्व गवर्नर क्लाइव ने मुझे इस सम्बन्ध मंप आश्वासन दिया था। इसके साथ ही उन्होंने गवर्नर कार्टियर को 10 लाख रुपये तथा उनके प्रधान सेनापति मुनरो को 1 लाख रुपये देने का वचन दिया। इस प्रकार बलवंत सिंह ने अंग्रेजों को अपने पक्ष में कर लिया।उधर बलवंत सिंह को पकड़ न सकने के रोष में अवध का नवाब पुन: गवर्नर कार्टियर से मिलने का निश्चय किया और उनसे मिलकर बलवंत सिंह के विरुद्ध पुन: सहायता माँगी। किन्तु इस बार गवर्नर कार्टियर ने लार्ड क्लाइव के सन्धिपत्र का हवाला देते हुए बलवंत सिंह के विरुद्ध नवाब की सहायता करने से इनकार कर दिया। नवाब गवर्नर के इस उत्तार से निराश होकर वापस चला गया। इधर बलवन्त सिंह भी गवर्नर को दिये जाने वाले घूस के रुपयों के लिए टाल-मटोल करते रहे और इसी बीच 1770 ईस्वी में उनका निधन हो गया और गवर्नर को एक रुपया भी न मिला।।[22]

बलवंत सिंह से संबंधित अन्य तथ्य – बलवंत सिंह जितने शुरवीर थे,उतने ही कुशल व्यवस्थापक भी।उनके शासन-प्रबन्ध की प्रशंसा करते हुए अंग्रेज इतिहासकार मिस्टर टॉरेन्स ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि 'बनारस का राजा बलवन्त सिंह बड़ा कुशल शासक था।उसकी प्रजा उससे बड़ी सन्तुष्ट थी।उसके शासन से किसानों को किसी प्रकार का भी भय नहीं था। उनके साथ कोई जोर-जबरदस्ती नहीं होती थी। बलवंत सिंह आस-पास के राजाओं में सबसे अधिक धनाढ्य व शक्ति-सम्पन्न थे।[23] वहीं इतिहासकार डॉ. मोतीचंद्र के अनुसार बलवन्त सिह के समय में बनारस की शासन व्यवस्था अच्छी नही थी। उस समय लोगों पर अनेक प्रकार के कर लगते थे। गुंडों, बदमाशो और गंगापुत्रो के उपद्रव बराबर चलते रहते थे, पर इतना सब होते हुए भी बलवन्त सिंह को बनारस से प्यार था। रुहेला सरदार अहमद शाह बंगश और बाद में अंग्रेजो को रुपया देकर कर उन्होंने बनारस को लूटने और सत्यानाश होने से बचाया था।अगर बलवन्त सिंह अपनी बागडोर ढीली कर देते तो उस अराजकता के युग में बनारस की बड़ी हानि होती।[24] बलवन्त सिंह केवल राजनीतिज्ञ और अच्छे सिपाही ही नहीं थे,वे अच्छे विद्याव्यसनी और कला-प्रेमी भी थे। खिड़की घाट और रामनगर का किला इन्होंने ही बनवाया था, जो उनके कला प्रेम के प्रतीक है। बलवन्त सिंह स्वयं ब्रजभाषा के कवि थे। उन्होंने चित्र चंद्रिका नामक एक ग्रन्थ भी लिखा था। इनका उपनाम काशिराज था।[25] बलवंत सिंह जिस प्रकार हिन्दू पंडित और संतों का आदर-सम्मान करते थे, उसी प्रकार से वे मुस्लिम फकीरों का भी सम्मान करते थे। ईरान का प्रसिद्ध संत कवि शेख अली हाजी जब काशी आए, तो बलवन्त सिंह ने उनका बड़ा आदर-सम्मान किया था।[26] बलवन्त सिंह के दरबार में अनेक विद्धान,कवि,लेखक और साहित्यकारों को प्रोत्साहन और सम्मान प्राप्त होता था। उनमें से प्रमुख हिंदी के कवि रघुनाथ जी बन्दीजन, एवं मुकंद लाल,भिखारी दास,मणि देव,गोपी नाथ, कवि मुख मंडन तथा मनियार सिंह आदि अनेक विद्धान् एवं कवि इनके दरबार में रहते थे। इनके प्रिय दरबारी पं. बैजनाथ मिश्र थे।[27]

मृत्यु –1769 ई. में बलवंत सिंह का स्वास्थ्य धीरे-धीरे गिरने लगा था। फिर भी उन्होंने अपने बल-बुद्धि व कुशल कर्मचारियों के सहयोग से अपने

राज्य को संगठित बनाये रखा। अंततः उन्होंने सभी प्रकार से बनारस राज्य को पुष्ट कर, गाजीपुर, चुनार, जौनपुर आदि को मिलाकर कुल 96 परगने की सीमा कर दी थी।[28] इनके शासन काल के अंत में जौनपुर में एक विद्रोह हुआ। उसे दबाने के लिए ये वहां गये। पर रास्ते में उनकी तबीयत खराब हो गई और रामनगर लौटते समय 22 अगस्त 1770 ई0 को बीच रास्ते में ही उनका देहांत हो गया।[29]

निष्कर्ष–इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों का अध्ययन कर हम निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि बनारस के आधुनिक राज्य की नींव भले ही इनके पिता मनसाराम ने रखी हो,लेकिन इसे विस्तारित, सुदृढ़ ,संगठित व शक्तिशाली बनाने का कार्य बलवन्त सिंह ने अपने साहस और बलिदान से किया था। उन्होंने अपनी राजनीतिक सूझ–बूझ,युद्ध एवं प्रशासनिक क्षमता और कूटनीतिक नीति के माध्यम से बनारस के आस–पास के क्षेत्रों को जीतकर बनारस को एक शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्य के रूप में स्थापित किया।उन्होंने अवध के नवाबों से कभी संघर्ष तो कभी उनके साथ समझौता किया।बलवंत सिंह ने अंग्रेजों से भी व्यावहारिक संबंध बनाए रखा।इससे उन्हें अपने राज्य की सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने में मदद मिली।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पाण्डेय,बनारसी लाल,महाराजा बलवन्त सिंह और काशी का अतीत,1974,पृ.26–28
2. वही, पृ.28
3. डॉ.मोतीचन्द्र,काशी का इतिहास,हिन्दी ग्रन्थ–रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड,प्रथम संस्करण ,सितम्बर,1962 पृ. 266,
4. वहीं,पृ. 251, बनारसी लाल पाण्डेय उपरोक्त पृ. 34
5. वही, पृ. 252, तथा बनारसी लाल पाण्डेय उपरोक्त पृ. 34–35
6. पाण्डेय,बनारसी लाल ,उपरोक्त पृ. 35
7. कैलेंडर ऑफ पर्शियन कॉरेस्पाडेंस भाग 5,उद्धृत डॉ. मोतीचन्द्र पृ. 252
8. पाण्डेय,बनारसी लाल,उपरोक्त पृ. 35, व डॉ. मोतीचंद्र पृ. 253
9. पाण्डेय,बनारसी लाल, पृ. 41–44
10. मुखोपाध्याय,निरंजन,भारतवर्षीय रा7जदर्पण,पृ.7–8,उद्धृत डॉ. मोतीचंद्र पृ. 253
11. डॉ. मोतीचंद्र , उद्धृत पृ. 254–255
12. पाण्डेय,बनारसी लाल ,उपरोक्त, पृ. 39–40
13. वही, पृ. 46–47 व डॉ. मोतीचंद्र पृ. 256–257
14. वही, पृ. 36–39
15. डॉ. मोतीचंद्र ,पृ. 255–256
16. पाण्डेय,बनारसी लाल ,वही पृ. 44–45
17. वही, पृ. 45–46
18. वही,पृ.48, भारतवर्षीय राजदर्पण, पृ. 11–12 उद्धृत,डॉ. मोतीचंद्र पृ. 257–258
19. वही, पृ. 49,डॉ. मोतीचंद्र पृ. 258
20. वहीं, पृ. 50–52,भारतवर्षीय राजदर्पण,पृ.13–14 उद्धृत ,डॉ. मोतीचंद्र पृ. 260
21. वहीं,पृ. 50–52
22. वही, पृ. 52–55, डॉ. मोतीचंद्र पृ. 264
23. वहीं, पृ. 62
24. डॉ. मोतीचन्द्र, उपरोक्त पृ. 264
25. वही, पृ 264
26. पाण्डेय,बनारसी लाल ,पृ. 55–56
27. वहीं, पृ. 58–60
28. वहीं,पृ. 60–61
29. डॉ. मोतीचन्द्र, उपरोक्त पृ. 264

****